ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 102-104

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

धर्मपाल साहिल की कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुशील कुमार

शोध अध्येता– हिंदी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, (पंजाब) भारत

Received-10.04.2022, Revised-15.04.2022, Accepted-18.04.2022 E-mail: sushilandora786@gmail.com

सारांशः – *अपनी लेखक कला के प्रकाश के माध्यम से पंजाब के समकालीन हिन्दी साहित्य को नव दीपक की तरह साहित्य संसार के प्रकाशवान करने वाले साहित्यकार धर्मपाल साहिल किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। साहिल ने कम समय में अपनी सरल, ओजमयी, स्पष्ट वाणी से पाठकों को जिस प्रकार प्रभावित किया है वह सच में उनकी श्लाघ्य प्रस्तुति है। उन्होंने जहाँ उपन्यास, कहानी और लघुकथा के क्षेत्र में अपने अनुभवों, वर्तमान समाज में व्याप्त व्यभिचारों, मनुष्य के सरोकारों को अपने पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है वहीं दूसरी ओर काव्य के क्षेत्र में भी उनकी लेखनी 'गागर में सागर' भरने का काम करती है। उनके साहित्य में कहीं कोमल, सहज भावनाएँ हैं, तो कहीं यही भावनाएँ ज्वालामुखी में फटते लावा के भाँति विस्फोटक रूप धारण कर लेती है। कहीं पर समर्पण दिखाई देता है तो कहीं पर विद्रोह का स्वर उठता है। "समाजशास्त्र शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द Sociology का हिंदी पर्याय है। Sociology शब्द Sociousस्वहने से मिलकर निर्मित हुआ है। Socious लेटिन भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है– समाज और स्वहने ग्रीक भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है– विज्ञान या शास्त्र।" इस प्रकार समाजशास्त्र का अर्थ हुआ, वह शास्त्र या विज्ञान जो कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाज का अध्ययन करे। साहिल की कहानियों में बिना किसी वाद, विचार धारा, नारे इत्यादि के स्वतन्त्र रूप से सामाजिकता के साथ–साथ संवेदनात्मक प्रतिबद्धता भी दिखाई देती है। इनकी कहानियाँ आधुनिक जीवन मूल्य एवं उत्तर आधुनिकता के दौर में बदलते प्रतिप्रेक्ष्य को सिद्ध करती हैं। अतः साहिल की कहानियों में निहित कथागत विशेषताओं का विस्तृत एवं सूक्ष्म वर्णन निम्नलिखित अनुसार है।*

कुंजीभूत शब्द– साहित्य संसार, प्रकाशवान, साहित्यकार धर्मपाल, ओजमयी, श्लाघ्य प्रस्तुति, उपन्यास, लघुकथा।

1. सामाजिक यथार्थ का चित्रण– साहिल की कहानियाँ सत्य ब्यान करती हैं। चाहे वह मधुर पारिवारिक संबंध हो या पारिवारिक संबंधों की टूटन, अकेलापन या लोगों में प्रचलित परम्परागत विश्वास या रूढ़ियों का चित्रण साहिल ने अत्यन्त पैनी दृष्टि से उनको शब्दों में पिरोया है। सामाजिक यथार्थ की सही तस्वीर उनकी कहानियों में देखने को मिलती है। 'किशनगढ़ की मीरा' कहानी में हम देखते हैं कि किशनगढ़ गाँव की लड़की मीरा, जिसका पति प्रीतम सिंह मर जाता है और वह भरी जवानी में विधवा होकर पति की चिता के साथ सती हो जाने पर विवश हो जाती है, लेकिन कुछ पढ़े लिखे व्यक्तियों और गाँव वालों के यत्नों से वह बच जाती है। मीरा मरने से तो बच जाती है लेकिन उस गाँव के मुखिया का बेटा उससे वेश्सावृत्ति करवाने लग जाता है। मीरा के माध्यम से उन स्त्रियों का दर्द बताया गया है, जो पति के बाद कोई सहारा न होने के कारण संसार में जीवित रहने और अपना पेट पालने के लिए किसी भी काम को करने के लिए चाहे वो नाजायज ही क्यों न हो विवश कर दी जाती हैं। उदाहरणार्थ मीरा के ये शब्द–"बैठो ने सरकार पहचाना नहीं मुझे, मैं मीरा हूँ वही जो सती... । हां हजूर मुझे उस दिन अपने पति के साथ मरने देते तो मैं इस तरह रोज–रोज मरने से बच जाती।" घूँघट में छिपे मीरा के यह शब्द नारी जीवन की उस त्रासदी को प्रकट करते हैं जो बेसहारा होने के कारण कपटी और वहशी लोगों का शिकार बनती है। ऐसी हालत में औरत जीवित होते हुए भी लाश के समान है जो जिम्मीदारों के स्वार्थ की पूर्ति हेतु पिसती है।

2. मधुर पारिवारिक संबंध– सामाजिक विषमता के साथ–साथ साहिल ने पारिवारिक संबंधों की मधुरता को भी वाणी दी है। उनकी कहानियों में पारिवारिक सदस्यों के आपसी मेल–मिलाप, माता–पिता का बच्चों के प्रति स्नेह, बच्चों का माता–पिता के प्रति सम्मान इत्यादि तत्त्वों का चित्रण पाया जाता है। मधुर पारिवारिक संबंधों के अंतर्गत माँ की ममता को प्रकट करती एक कहानी है 'मेरा मनकू'। मनकू आठ–दस वर्षीय लड़का है जो अपने माँ–बाप का इकलौता बेटा है वह उसकी प्रत्येक जिद्द पूरी करते हैं, उसकी ग़लती पर भी उसे झिड़कते नहीं, वह जो भी खाने की जिद्द करता उसी समय वो चीज लाने दौड़ पड़ते। जैसे कि एकबार मनकू रात के ग्यारह बजे जिद्द करता है कि उसे हलवा खाना है तो माँ पड़ौसी के घर रात को सूजी माँगने चली जाती है। अगर वह गली में किसी बच्चे को मारता है तो भी वह उसे डाँटने या समझाने की बजाय चूमने लगती है अर्थात् ममता की आड़ में वह यह भी नहीं समझ पाती कि वो अपने लाडले को बिगाड़ रही है। कुछ महीनों बाद वह अपनी पड़ोसन को सूजी वापस लौटाने जाती है तो वह कहती है "रहने दो मनकू को हलवा बनाकर खिला देना। यह सुनते ही वह रो पड़ती है–'बहन जी, किसे खिलाऊँगी, मेरा मनकू तो इस दुनियाँ से...। बहन जी उसे कैंसर था। डाक्टरों ने जवाब दे दिया था, आखिरी स्टेज थी, कहते फूट कर रो पड़ी।" इस प्रकार माँ की आँखों से ममता के ऐसे आँसू निकलते हैं जो कभी सूनी गोद

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

को भिगोते हैं तो कभी अपने ज़िगर के टुकड़े के जाने की याद ताजा कर देते हैं।

3. प्रवासी मजदूरों की समस्या– उत्तरआधुनिकता के इस युग में जहाँ मनुष्य को प्रत्येक सुख सुविधा, अत्यधिक पैसा, आराम का सब सामान उपलब्ध करवाया है वहीं निम्न वर्ग के लोग इस पहुँच से बाहर हैं। वे उच्च वर्ग को मुकाबला करना तो दूर दो वक्त की राटी का गुजारा भी बड़ी मुश्किल से कर पाते हैं। ऐसी ही अवस्था प्रवासी मजदूरों की भी है जो अधिक पैसा कमाने हेतु अपना घर परिवार छोड़कर प्रदेश में जाते हैं लेकिन वहाँ भी उनपर जिम्मीदारों की कूटनीतियां प्रहार करती हैं। 'विडम्बना' कहानी इस समस्या पर पूर्णरूप से खरी उतरती है। जिसमें भोल–भाले, सीधे सादे बिहारी मजदूर शिवचरण के जीवन की त्रासदी को मुखरित किया गया है। शिवचरण अपने साथियों के साथ पंजाब आता है और एक सरदार जी के साथ सभी मजदूर उसके खेतों पर चले जाते हैं। गेहूँ की कटाई का काम शुरू हो जाता है इसी बीच तेज गर्मी के कारण वह बीमार हो जाता है। अस्पताल में इलाज पर उसके सारे पैसे खत्म हो जाते हैं। अस्पताल से छुट्टी के बाद उसके सामने पैसे कमाने की समस्या खड़ी होती है कि वो अपनी रोटी का जुगाड़ कर सके और माँ–बाप, बीबी, बच्चों के लिए भी कुछ पैसे भेज सके, लेकिन बिमारी के कारण वह इतना कमजोर हो जाता है कि मजदूरी करना तो दूर उसके लिए दो कदम चलना भी कठीन हो जाता है। आखिर वह हिम्मत जुटाकर अनाज मण्डी पहुँचता है। वहाँ उसे बीस रुपए की मजदूरी मिलती है उसे चार गेहूँ की बोरियाँ एक घर में पहुँचानी होती हैं। वह कमजोर टांगों के बल ठेले में बोरियाँ लेकर चल पड़ता है पूरा जोर लगाने के कारण उसकी सांस चढ़ जाती है, पसीने से लथपथ वह सड़क की उतराई पर उतरने लगता है लेकिन बोझ न संभल सकने एवं संतुलन बिगड़ने के कारण वह गिर पड़ता है और एक–एक करके चारों बोरियाँ उसके ऊपर गिर जाती हैं उसका मुँह सड़क पर जोर से टकराने के कारण वह बेसुध हो जाता है। "गेहूँ की बोरियों के नीचे दबे शिवचरण के कमर से चिपके पेट को देखकर उसके गिर्द जमा हुई भीड़ ने दाँतों तले उंगली दबा ली थी।" इस प्रकार कहानीकार ने शिवचरण के माध्यम से परदेस में रहने वाले बेसहारा, भूखे, बेरोज़गार मजदूरों की दयनीय स्थिति का बड़ा ही मार्मिक चित्र रेखांकित किया है।

4. आडम्बरों तथा धार्मिक विश्वासों पर चोट– आधुनिक मनुष्य पैसों से किसी की मदद तो नहीं करना चाहता लेकिन धर्म के नाम झूठ–मूठ के आडम्बरों में चाहे जितना हो सके पैसा बहा दे 'दाता के नाम पर' इसी प्रकार की लघु कथा है। एक बस में सात–आठ वर्षीय लड़की अन्धे बाप को साथ लिए भीख माँग रही होती है–दाता के नाम पर पैसा दे दो, लेकिन सभी यह कहकर उनसे मुँह फेर लेते हैं कि उनके पास टूटे पैसे नहीं है। कण्डक्टर द्वारा झिड़कने पर वह लड़की बाप समेत नीचे उतर जाती है। आधे घण्टे बाद बस एक पुल से गुजर रही होती है। "बहुत सी सवारियाँ अपनी सीटों से उठी और चलती बस की खिड़कियों से पैसे नदी की ओर फेंक कर फिर हाथ जोड़कर 'जय हो गंगा मैया की' कहने लगे।" इस लघुकथा पर विचार किया जाए तो हम देखते हैं कि धार्मिक रीति के अनुसार लोगों ने पुल से पैसे नदी में फेंक दिये तो इससे उन्हें क्या लाभ हुआ अगर वह भिखारिन लड़की को दौ पैसे देते तो शायद दुआओं का खजाना प्राप्त कर लेते।

5. दहेज प्रथा पर व्यंग्य– मानवता के लिए अभिशाप दहेज प्रथा आज हमारे लिए गहरी चिंता का विषय बन चुकी है। आज तक न जाने कितनी ही लड़कियाँ दहेज की बलि चढ़ चुकी हैं। ज़हर देकर मार डालना, जिन्दा जला देना, घर के हालात से तंग आकर आत्महत्या कर लेना इत्यादि जैसी सुर्खियाँ हमें अक्सर समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलती हैं। दहेज माँगने की इसी भयानक प्रवृत्ति को धर्मपाल साहिल ने 'मंगता' लघुकथा में वाणी देने का प्रयास किया है। साहिल ने एक शादी का कथानक लिया है जिसमें लड़के का नशे में धुत बाप लड़की के बाप से दहेज की कोई ऊँची फरमाईश कर रहा था। इस पर लड़की का बाप लड़के के बाप के पाँव पड़ने लगता है यह देखकर खुशियों भरे माहौल में उदासी छा जाती है। वहीं पण्डाल के बाहर एक भिखारी पास खड़े किसी बाराती से भीख माँगता है तो व्यक्ति कहता है कि लड़के के बाप से माँगो। तब भिखारी मजाक करता है– "सरकार, वह हमें क्या देगा जो, खुद ही माँग रहा हो।" इस प्रकार साहिल ने मंगते के माध्यम से दहेज माँगने वाले मंगतों की ओर बड़ी पैनी दृष्टि से व्यंग्य किया है जो सब कुछ होने के बावजूद भी दहेज रूपी भीख माँगते हैं।

6. बेरोजगारी की समस्या– धर्मपाल साहिल समाज के बीच रहकर लिखने वाले कहानीकार हैं और समाज में पनप रही बेरोजगारी की समस्या पर भी उतनी ही तीव्र गति से कलम चलाते हैं जितनी अन्य समस्याओं पर। बेरोजगारी की जड़ें युवा वर्ग विशेष तौरपर शिक्षित युवाओं को मानसिक रूप से बीमार कर रही है। नौकरी न मिलते पर लूटपाट, चोरी डकैती करने पर विवश हो जाने वाले नौजवानों के लिए रोजगार ढूँढना एक विकट समस्या है। ऐसे नौजवान अक्सर हीनभावना एवं निराशा के शिकार हो जाते हैं और कभी–कभी आत्महत्या तक की भी नौबत आ जाती है। बेरोजगारी युवक नौकरी पाने के जायज नाजायज हर प्रकार के अवसर ढूँढते रहते हैं। 'सम्भावना' लघुकथा में कुछ इसी प्रकार की अभिव्यक्ति मिलती है। एक नौजवान अस्पताल में भर्ती है जिसकी टाँग खराब है। डॉक्टर उसे कहते हैं कि अगर इस बार ऑप्रेशन द्वारा टाँग ठीक नहीं हुई तो मजबूरन टाँग काटनी पड़ेगी। नौजवान जोकि बेरोजगार है, गरीब माँ–बाप का बेटा है। डॉक्टर से अपनी टाँग काट देने

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

की इच्छा करता है और एहसान भरे शब्दों में कहता है– "डॉक्टर साहिब, मेरे माता–पिता पहले ही मेरे एक्सीडेंट के बहुत बड़े कर्ज के तले दब गये हैं। साथ ही मैं भी पिछले पाँच वर्ष से एम.ए. प्रथम श्रेणी से पास करके बेरोजगार घूम रहा हूँ। विकलांग होने पर मुझे नौकरी मिलने की भी सम्भावना बढ़ जाएगी ...।" नौजवान के इन शब्दों में बेबसी, लाचारी का स्वर सुनाई पड़ता है।

निष्कर्ष– साहिल की कहानियों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि उनकी सभी कहानियाँ उनकी पैनी दृष्टि और सूझबूझ का ही परिणाम है। जिनमें उन्होंने कहानियों का मुख्य विषय आज के पदार्थवादी एवं उपभोक्तावादी युग रूपी जाले में मकड़ी की भाँति फंसे मनुष्य की आकांक्षाओं, इच्छाओं की उन तमाम छोटी बड़ी घटनाओं को सरल, सुस्पष्ट भाषा में बयान किया है। सामाजिक तकाजों को पूरा करतें उन्होंने ऐसी कथा सरिता प्रवाहित की जिसमें अनेकों कहानियाँ छोटी बड़ी लहरों के रूप में बहती चली गई हैं। कहानी पढ़ते–पढ़ते जिज्ञासा बढ़ती जाती है और चरम आनन्द की प्राप्ति होती है। वस्तुतः पाठक के साथ साधारणीकरण का सा संबंध बना लेने वाले धर्मपाल साहिल वास्तव में प्रशंसा के अधिकारी हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, जे. पी., समाजशास्त्र के मूल तत्त्व, नई दिल्ली : प्रेंटिस हाल आफ इंडिया, 2007, पृ. 11.
2. साहिल, धर्मपाल, नीलकंठ, साहिल प्रकाशन, मुकेरियाँ, 1993, पृष्ठ.5.
3. वही, पृष्ठ. 8–9.
4. साहिल, धर्मपाल, किसी भी शहर में, प्रेम प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली, 2004,पृष्ठ. 64.
5. साहिल, धर्मपाल, नीलकंठ, नर्गिस(लघुकथा संग्रह), पंजाबी साहित्य सभा, मुकेरियां, 1988, पृष्ठ.9.
6. साहिल, धर्मपाल, खुलती गाँठे (लघुकथा संग्रह), आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली, 1999, पृष्ठ. 14.
7. वही, पृष्ठ. 63.

*****